Indological Perspective
G.S.Ghurye

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

- गोविन्द सदाशिाव घुर्ये भारत के उन कतिपय गणमान्य प्रतिश्ठित अग्रणी समाजशस्त्रीयों में से है जिन्हें भारत में समाजाास्त्र विशय को प्रणीत करने का श्रेय दिया जाता है।
- पैट्रिक गैड्स के बाद बम्बई विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग का कार्यभार संभालने वाले घुर्ये प्रथम भारतीय विद्वान थे।
- यही कारण है कि कुछ लोगों ने इस विशय के संस्थापक के रुप में घुर्ये को ‘भारत के समाजशास्त्र के पिता‘ की उपाधि से भी विभूशित किया है।
- जाति और जनजाति, तथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था के मुख्य निर्णायक आधारों पर इनका अध्ययन भारतीय समाजशास्त्र की निधि है, जो कल के साथ–साथ आज भी प्रासंगिक है।
- इन्होंने भारतशास्त्रीय उपागम (Indology Approach) का विकास किया।

घुर्ये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

- घुर्ये ने अनेक विशयों पर लिखा है, और उन्होंने जो अध्ययन पद्वति अपनाई है, वह ऐतिहासिक एवं भारतशास्त्रीय (Indology) पद्वति है। घुर्ये ने अपने सभी अध्ययनों में तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन पद्वति का उपयोग किया है। **तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन पद्वति** में घुर्ये ने उन सभी समाजशास्त्रियों को जो उनके विद्यार्थी रहे हैं, या वे लोग जो उनके सिद्धान्त से प्रभावित थे, सम्मिलित किया जा सकता है। यह पद्वति घुर्ये एवं उनके शिश्य समाजशास्त्रियों के विशाल एवं समृद्व योगदान पर आधारित है। **इस पद्धति में भारतीय इतिहास तथा महाकाव्य जैसे परम्परागत स्वरुपों को आधार माना है।** इसलिए घुर्ये की इस अध्ययन पद्वति को भारत विद्याशास्त्र या वाड्.मय परिप्रेक्ष्य के नाम से जाना जाता है।

- घुर्ये ने अपने समाजशास्त्रीय विश्लेशण में अनेक विशयों की विवेचना की है एवं भारतीय समाज का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने **जाति व्यवस्था, नातेदारी प्रथा, सौन्दर्यशास्त्र, वेशभूशा का गति विज्ञान, भारतीय नगर, ग्रामीण समाज में होने वाले परिवर्तन, भारतीय आदिवासी एवं प्रजाति, भारतीय साधुओं तथा सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया।**

- भारतीय संस्कृति और समाज के विभिन्न पक्षों के अन्वेशण में उन्होंने भारत विद्याशास्त्र के स्रोतों का प्रयोग किया। उनका भारतीय साधुओं, धार्मिक चेतना तथा दो ब्राह्मणवादी संस्थाओं के रुप में गोत्र एवं चरण नामक अध्ययनों में भारत के पौराणिक एवं कई धार्मिक ग्रन्थों का प्रयोग किया गया है। घुर्ये न भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य द्वारा भारतीय साधुओं के उत्थान, इतिहास, कार्य और वर्तमान में हिन्दू साधुओं के संगठनों का उल्लेख किया है।

- घुर्ये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के प्रति काफी मोह था, किन्तु उन्होंने सामाजिक–सांस्कृतिक मानवशास्त्र में प्रचलित क्षेत्र कार्य परम्परा के प्रति भी विमोह प्रकट नहीं किया। उन्होंने अपने कई अध्ययनों में अत्याधुनिक सर्वेक्षण विधि और सांख्यिकी तकनीकि ('दि महादेव कोलिज' 1963 तथा सेक्स हेबिट्स ऑफ मिडिल क्लास पिपल 1938) के अध्ययन में क्षेत्र–कार्य विधि का प्रयोग कर भारतीय समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र मे अनुभववादी परम्परा की जड़ों को मजबूत किया।

घुर्ये के जाति प्रथा पर विचार

- घुर्ये की रुचि प्रारम्भ से ही जाति और प्रजाति से सम्बंधित विशयों में रही है। उनका पी. एच. डी. का विशय भी 'जाति का नृजातिक सिद्धान्त' था जिसके आधार पर सन् 1932 में प्रथम पुस्तक 'भारत में जाति और प्रजाति' प्रकाशित हुई। बाद में यही पुस्तक कुछ हेर–फेर, संशोधन के साथ समय–समय पर अलग–अलग नामों से (**'भारत में जाति और वर्ग' 1950 तथा जाति, वर्ग और व्यवसाय, 1961**) कई संस्करणों में प्रकाशित हुई। अपने विशय की आज भी यह एक प्रमाणिक पुस्तक मानी जाति है। इस पुस्तक में, घुर्ये ने जाति के उद्भव से लेकर इसके भविश्य का विश्लेशण किया है। उन्होंने जाति को एक जटिल घटना बताते हुए इसकी कोई सामान्य परिभाशा नहीं दी है, किन्तु इसकी छः विशेशताओं का अवश्य विश्लेशण किया है। ये विशेशताएं हैं– समाज का खण्डात्मक विभाजन, संस्तरण पेशे के अप्रतिबन्धित चुनाव का अभाव, नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएं एवं विशेशाधिकार, भोजन तथा सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध तथा विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध। जाति प्रथा की विशेशताओं का उल्लेख नीचे दिया गया है

समाज का खण्डात्मक विभाजन (Segmental Division of Society)

- जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को विभिन्न खण्डों में विभाजित कर दिया है और प्रत्येक खण्ड के सदस्यों की स्थिति, पद तथा कार्य सुनिश्चित है। खण्ड विभाजन से तात्पर्य– एक जाति के सदस्यों की सामुदायिक भावना सम्पूर्ण समुदाय के प्रति न होकर अपनी ही जाति तक सीमित होती है। व्यक्ति की निश्ठा एवं श्रद्धा समुदाय के बजाय अपनी जाति के प्रति होती है। प्रत्येक जाति की एक जाति पंचायत होती है।

संस्तरण (Hierarchy)

- समाज में सभी जातियों की स्थिति समान नहीं है, बल्कि उनमें ऊँच नीच का एक संस्तरण या उताव–चढ़ाव पाया जाता है। ऊँच नीच की इस व्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान ऊँचा है और शूद्रों का स्थान सबसे नीचा। क्षत्रिय और वैश्य इनके मध्य में है। जन्म पर आधारित होने के कारण इस संस्तरण में स्थिरता एवं दृढ़ता पायी जाती है।

पेशे के अप्रतिबन्धित चुनाव का अभाव
(Lack of unrestricted choice of occupation)

- प्रायः प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहता है। कई जातियों के नाम से ही उनके व्यवसाय का बोध होता है। प्रत्येक जाति यह चाहती है कि उसके सदस्य निर्धारित जातिगत व्यवसाय ही करें। मुगल काल से जाति के प्रतिबन्ध ढीले होने लगे। वेन्स का मत है कि ''जाति का पेशा परम्परागत होता है। परन्तु यह किसी अर्थ में आवश्यक नहीं कि उसी पेशे के द्वारा सभी जातियां जीवन निर्वाह कर रही है।'

नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएं एवं विशेशाधिकार
(Civil and Religion Disabilities and Privilege)

- जाति व्यवस्था में उच्च जातियों को कई सामाजिक एवं धार्मिक विशेशाधिकार प्राप्त है, जबकि निम्न एवं अछूत जातियों को उनसे वंचित किया गया है। विशेशकर दक्षिणी भारत में अछूत जातियों पर अनेक अयोगयताएं लाद दी गयी।

भोजन तथा सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध (Restriction on Fooding and Social Intercource)

- जाति व्यवस्था में जातियों के परस्पर भोजन एवं व्यवहार से सम्बन्धित अनेक निशेध पाये जाते है जैसे किसके हाथ का बना कच्चा भोजन करना है, किसके हाथ का बना पक्का भोजन करना है। सामान्यतया ऊँची जातियों के द्वारा बनाया गया भोजन निम्न जातियां स्वीकार कर लेती हैं। किन्तु निम्न जातियों के लोगों द्वारा बनाया गया कच्चा व कभी–कभी पक्का भोजन भी उच्च जातियां स्वीकार नहीं करती है।

विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध (Restriction of Marriage)

- जाति की एक प्रमुख विशेशता है कि प्रत्येक जाति अपनी जाति या उपजाति में विवाह करती है। वेस्टरमार्क ने तो जाति अन्तर्विवाह को जाति का सार माना है। यद्यपि कुछ पर्वतीय जातियों एवं दक्षिण के नम्बूदरी ब्राह्मणों में अपने से निम्न जातियों की लड़कियों से विवाह करने की प्रथा पायी जाती हैं। प्रो0 घुर्ये ने जाति समूहों की प्रकृति का उल्लेख किया है। वैदिक युग से लेकर ब्रिटिश काल तक जाति प्रथा में होने वाले परिवर्तनों का घुर्ये ने प्रमाणों के साथ उल्लेख किया है।